प्राक्कथन

प्राक्कथन

आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य की अनेक विधाएँ हैं। गद्य-साहित्य में कहानी एक लोकप्रिय विधा है। हिंदी साहित्य-जगत् में कहानी विधा का स्थान अग्रणी है। आज व्यक्ति के पास समय बहुत कम है इस कारण घंटो पढ़ाई करने समय नहीं मिलता। कहानी एक ऐसी विधा है जो कम समय में अधिक ज्ञान प्राप्त करा देती है। अत: स्पष्ट है कि कहानी हिंदी साहित्य की एक ऐसी लोकप्रिय विधा है, जो वर्तमान युग की माँग पूरी करती है।

आधुनिक युग में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण परिवर्तन आ रहा दिखाई देता है। विशेषत: स्वतंत्रता के बाद लगभग सन् 1960 के आसपास देश में युद्ध, अकाल, बेरोजगारी, भुखमरी आदि से सामान्य जनता घायल हो चुकी थी। यह अपनी आँखों से देखनेवाले कहानीकारों ने उनकी वेदना को अपनी कहानियों में चित्रित किया, जिसमें ज्ञानरंजन एक है।

एम्. फिल. के लघु शोध-प्रबंध के लिए विषय का चयन करना था। इस कारण अनेक कहानीकारों की कहानियाँ पढ़ी। लेकिन जब ज्ञानरंजन की 'शेष होते हुए' कहानी पढ़ी तो पहली बार ऐसा लगा कि यह तो मेरी अपनी कहानी है। 'शेष होते हुए' कहानी के कथानायक मझले के जीवन और मेरे जीवन में समानता दिखाई दी और वह कहानी मुझे बहुत पसंद आई और मैंने तय किया कि उनके कहानी साहित्य पर शोध-कार्य करना है। ज्ञानरंजन स्वयं मध्यवर्गीय परिवार के होने के कारण उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन के दु:खों को और यातनाओं को भोगा है। इस कारण मध्यवर्गीय जीवन की विड़ंबनाओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। अध्यवसाय, आत्मविश्वास, लगन, परिश्रम और पूरी तैयारी के साथ उन्होंने लेखन किया है। ज्ञानरंजन की कहानियों के दिशाहीन युवक और उनकी व्यथाएँ अकेले उन्हीं की नहीं हैं, तमाम भारतीय युवकों की हैं। मध्यवर्गीय जीवन विड़ंबनाओं और समस्याओं से पीड़ित है। इसी कारण मुझे लगा कि इन मध्यवर्गीय पात्रों की विवशताओं और कहानीकार को समाज के सामने खोलकर रख देना चाहिए।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न उभरकर आए -

1. ज्ञानरंजन का जीवन कैसा है ?

2. ज्ञानरंजन की कहानियों के मूल विषय कौनसे हैं ?

3. ज्ञानरंजन ने मध्यवर्गीय जीवन का ही चित्रण क्यों किया है ?

4. साठोत्तरी कहानीकारों में ज्ञानरंजन का स्थान अलग क्यों है ?

अध्ययन के उपरांत उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए हैं, उन्हें उपसंहार में लिखा है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्न लिखित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत ज्ञानरंजन का जीवन परिचय दिया है। जन्म, माता-पिता, बचपन, शिक्षा, विवाह और साथ ही उनकी प्रकाशित रचनाएँ,रचनाओं का प्रकाशन तथा प्रकाशन वर्ष का विवरण दिया है। इसमें संपादक ज्ञानरंजन विषयक विवेचन महत्त्वपूर्ण है। ज्ञानरंजन स्वयं एक मध्यवर्गीय होने के कारण मध्यवर्ग की यातना एवं विवशताओं को उन्होंने अनुभव किया है इस कारण हर कहानी का हर पात्र मध्यवर्गीय है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत ज्ञानरंजन के पूर्ववर्ती कहानीकारों का सामान्य परिचय, समकालीन हिंदी कहानी साहित्य का इतिहास, तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिवेश का विवेचन सातवें दशक के कहानीकार, ज्ञानरंजन की कहानियों का सामान्य परिचय, परवर्ती कहानीकारों के मध्य 'ज्ञानरंजन' का स्थान आदि के आधार पर विवेचन किया है। कुल 26 कहानियाँ हैं। परिवार को केंद्र में रखकर लिखी 12 कहानियाँ हैं। राजनीति पर एक ही कहानी है जो ज्ञानरंजन की पहचान बन चुकी है। प्रेम की बहुत-सी कहानियाँ हैं। पीढ़ियों का संघर्ष, परिवार विघटन, अंधश्रद्धा, आत्महीनता, सेक्स-कुंठा, भुखमारी, बेरोजगारी का विवेचन किया हुआ है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत विवेच्य कहानियों में चित्रित परिवार का चित्रण पारस्परिक संबंधों के आधार पर किया है। इस के अंतर्गत पति-पत्नी, पिता-पुत्र, माता-पुत्र, आदि संबंधो का विवेचन किया है। साथ ही पारिवारिक विघटन, रिश्तों में अंतर, टूटते दांपत्य संबंध आदि का भी विवेचन किया है। परिवार विघटन किन कारणों से हो रहा है, कौन सा परिवार सुखी और कौन सा परिवार दु:खी है, रिश्तों में अंतर क्यों आ रहा है इसका विवेचन इस अध्याय में करने का प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित समाज जीवन का विवेचन किया है। समाज जीवन में दिशाहीन युवक, पीढ़ियों का संघर्ष, बदलते मूल्य, प्रेम का परिवर्तित रूप, महानगरीय खोखली चकाचौंध, मध्यवर्गीय जीवन की विड़ंबना, अंधश्रद्धा, राजनीति, आर्थिक संघर्ष, रूढ़ि-परंपरा आदि का विवेचन किया है। युवकों के दिशाहीन होने के कारण, बदलते मूल्य के कारण मध्यवर्गीय ही क्यों प्रयत्नशील है, अंधश्रद्धा पर कौन विश्वास रखता है कौन नहीं, इसका विवेचन इस अध्याय में किया है।

पंचम अध्याय के अंतर्गत विवेच्य कहानियों का शिल्प जानने का प्रयास किया है। कहानियों में कथाशिल्प, चरित्र शिल्प, संवाद योजना, वातावरण आदि का विवेचन किया है। भाषा में मुहावरें, कहावतें, अपशब्द, अलंकारिकता, बिंब आदि का भी विवेचन किया है। शैली के अंतर्गत आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, संकेत, डायरी, मनोविश्लेषणात्मक, काव्यात्मक, फ्लैश-बैक आदि शैलियों का विवेचन किया है। ज्ञानरंजन की कहानियों का शिल्प में कौनसी अलगता है ? इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का विवेचन किया है।

प्रबंध के अंत में उपसंहार दिया है जिसमें अध्यायों के निष्कर्ष समन्वित रूप में दिए हैं।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबेध की मौलिकता -

(1) ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन का चित्रण पारस्पारिक संबंधों के आधार पर प्रस्तुत किया है।

(2) ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन की विड़ंबना और समस्याओं का विवेचन सूक्ष्मता से किया है।

(3) विवेच्य कहानियों का सूक्ष्मता से अध्ययन करके शिल्प को जानने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियाँ -

(1) ज्ञानरंजन साठोत्तर कहानीकार हैं। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण करके उनके अंदर की कमियाँ, कायरतापन और अन्य समस्याओं की ओर निर्देश किया है।

(2) शिक्षित युवक गलत नेता का अनुगमन करते हैं उन्होंने अपने आप को स्वतंत्र जीने की आदत डालनी चाहिए।

(3) नई पीढ़ी को चाहिए कि वह पुरानी पीढ़ी को ठीक से समझ ले।

(4) परिवार में व्यक्तिगत विचार स्वातंत्र्य होना चाहिए।

(5) रूढ़ि, परंपरा, कर्मठता को तिलांजली देनी चाहिए।

(6) असफल हताश युवकों का चित्रण प्रमुख रूप से कहानियों में है। ऐसे युवकों को कहानीकार स्वतंत्र व्यवसाय करने की प्रेरणा देता है।

(7) संयुक्त परिवार की खामियों की ओर दृष्टिपात कर आज की परिस्थिति में विभक्त परिवार योग्य है इस प्रकार की स्थापना आपने की है।

(8) कहानियों में कथावस्तु और चरित्र की तुलना में विचार महत्त्वपूर्ण है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ -

ज्ञानरंजन की कहानियों को लेकर इस दिशा में भी शोध-कार्य किया जा सकता है -

(1) ''ज्ञानरंजन की कहानियाँ शेष होते हुए लोगों का दस्तावेज।''

(2) ''ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन।''

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहायता करने वाले तथा मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित करने वाले गुरूजनों और हितचिंतकों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा दायित्व है। मेरे श्रद्धेय गुरूवर्य तथा शोध-निर्देशक डॉ. इरेश स्वामी जी ने अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद समय-समय पर मुझे मार्गदर्शन किया इसलिए शोध-कार्य पूरा हो सका। अत: उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूँ। श्रद्धेय डॉ. वसंत मोरे जी, डॉ. पांडुरंग पाटील जी, डॉ. अर्जुन चव्हाण जी, डॉ. संजय नवले जी आदि गुरूजनों ने समस-समय पर मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन दिया। उनके स्नेहाशिष को कृतज्ञता में सीमित रखने का दु: साहस मुझसे नहीं होगा।

मेरे मित्र परिवार में अशोक बाचुळकर, गिरीश काशिद, मिलिंद साळवी, मनोज भंड़ारे, अनिल साळोखे, सीताराम दैन, बाबासाहेब जगताप, रेवन वायफळकर आदि ने समय-समय पर सहायता की, अत: उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मेरे परिवार में मेरे माता-पिता, बड़े भाई-भाभी तथा भाई माधव, गणेश, विकास, रंगनाथ, सुरेश आदि के सहयोग के बिना यह कार्य संपन्न नहीं हो पाता।

इस लघु शोध-प्रबंध को सुचारू रूप में टंकित करने में अल्ताफ मोमीन (सुभाषनगर, कोल्हापुर, फोन - 692477) काफी सहयोग मिला। अत: उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा दायित्व है। अंत में मेरे अनेक सहयोगी एवं सहपाठी मित्र तथा अन्य रिश्तेदारों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग प्राप्त हुआ उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।